5:00

Ch-21.pdf
nios.ac.in

21

जनसंख्या वृद्धि और वितरण

पिछले दो माड्यूलों में हमने विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों और भारत की प्रमुख आर्थिक गतिविधियों पर विस्तार से चर्चा की है। इनमें भूमि, मृदा, जल, खनिज, वन और वन्य जीवन जैसे संसाधन शामिल हैं। हमने उपरोक्त संसाधनों के वितरण तथा उनकी उपयोगिता का भी विश्लेषण किया है। इन सभी पक्षों का अध्ययन देश में रहने वाले लोगों के सम्बन्ध में किया गया है। लोगों से हमारा अभिप्राय मात्र उनके उपभोक्ता होने से नहीं अपितु प्राकृतिक संसाधनों के विकासकर्ता अथवा प्रबंधक होने से है। इस उद्देश्य के लिए हम उनकी शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति, उनके व्यावसायिक, तकनीकी और सामाजिक कौशलों और उससे बढ़कर उनकी अपेक्षाओं और मूल्य व्यवस्था को देखते हैं। इस संदर्भ में आप महसूस करेंगे कि लोग मात्र उपभोक्ता नहीं है अपितु देश के महत्वपूर्ण संसाधन भी हैं। इस पाठ में हम विश्व के संदर्भ में भारत की जनसंख्या के आकार का वर्णन भी करेंगे। हम जनसंख्या वृद्धि के तरीकों, उनके निर्धारकों और परिणामों का भी विश्लेषण करेंगे। हम जनसंख्या के वितरण और घनत्व की व्याख्या करेंगे और उन्हें प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का विश्लेषण भी करेंगे। साथ ही अंत में हम बढ़ती जनसंख्या की चुनौतियों पर चर्चा भी करेंगे।

सीखने के प्रतिफल

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् शिक्षार्थी:

- वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत की जनसंख्या का वर्णन करता है;
- 1901 के बाद से जनसंख्या वृद्धि की प्रवृति को स्पष्ट करता है;
- जनसंख्या के असमान वितरण के लिए उत्तरदायी घटकों का विश्लेषण करता है और
- बढ़ती जनसंख्या के मुद्दों और चुनौतियों की व्याख्या करता है।

21.1 जनसंख्या वृद्धि और आकार

भारत में जनसंख्या वृद्धि और वितरण के बारे में विस्तार से चर्चा करने से पहले आइये हम भारत

5:00
Ch-21.pdf
nios.ac.in

की जनसंख्या को इसके कुल क्षेत्रफल के संदर्भ में समझें और भारत की जनसंख्या और इसके कुल क्षेत्र का विश्व की जनसंख्या और क्षेत्रफल के संदर्भ में तुलनात्मक विश्लेषण करें। इससे आपको भारत की जनसंख्या की सघनता के बारे में कुछ जानकारी मिलेगी। इससे आपको भारत में जनसंख्या संबंधी मुद्दों और चुनौतियों का गहन विश्लेषण करने में भी सहायता मिलेगी।

(क) जनसंख्या का आकार

आप जानते ही होंगे कि भारत विश्व में चीन के बाद जनसंख्या के मामले में दूसरा बड़ा देश है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या 1,210,854,977 (लगभग 121 करोड़) थी। यह विश्व की कुल जनसंख्या का 16.7 प्रतिशत है। दूसरे शब्दों में विश्व का हर छठा व्यक्ति भारतीय है। भारत के पास विश्व के कुल भू-क्षेत्र का 2.42 प्रतिशत है। क्षेत्रफल के संदर्भ में भारत का रूस, कनाडा, चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्राजील और आस्ट्रेलिया के बाद सातवां स्थान है। चीन को छोडकर बाकी पांचों देशों की जनसंख्या भारत से बहुत कम हैं। इन पांच देशों का कुल क्षेत्रफल भारत से 16 गुणा है पर आबादी बहुत कम है। यह भी स्पष्ट किया जा सकता है कि उत्तरी अमरीका, दक्षिण अमरीका और आस्ट्रेलिया की कुल आबादी भारत की जनसंख्या से कम हैं। सबसे बढ़कर यह है कि हम प्रति वर्ष जनसंख्या में 17 मिलियन लोग जोड़ रहे हैं। यह आस्ट्रेलिया की कुल आबादी से अधिक है। वास्तव में चीन की जनसंख्या में वार्षिक वृद्धि भारत की तुलना में कम है।

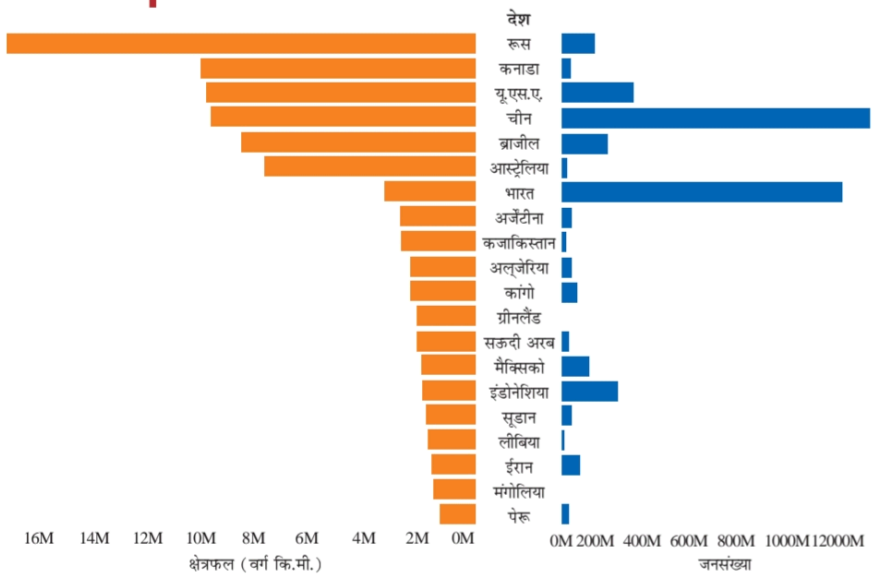

चित्र 21.1 देशों का भू-क्षेत्र और जनसंख्या का आकार

5:00
Ch-21.pdf
nios.ac.in

(ख) जनसंख्या की वृद्धि

क्या आपको जनसंख्या वृद्धि की प्रवृति के बारे में कुछ जानकारी है? जब हम प्रवृति के बारे में बात करते हैं तो इसका अभिप्राय बीते वर्षों में हुए जनसंख्या में परिवर्तन से होता है। क्या आप जानते हैं कि जनसंख्या वृद्धि के लिए कौन-से निर्धारक हैं? किसी क्षेत्र में जनसंख्या की वृद्धि तीन कारकों पर निर्भर करती है जैसे जन्म दर, मृत्यु दर और प्रवास। जन्म दर को हम प्रतिवर्ष प्रति हजार पर हुए जीवित जन्म से मानते हैं। आमतौर पर जन्म दर विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और जनसांख्यिकीय कारकों से प्रभावित होती है। इसी प्रकार मृत्यु दर को भी हम प्रति वर्ष प्रति हजार व्यक्तियों पर हुई मौतों से मापते हैं। प्रवास शब्द का अर्थ लोगों का एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र अथवा एक देश से दूसरे देश में आना-जाना होता है। प्रवास की दर उस क्षेत्र से रह रहे लोगों की संख्या में कमी और वृद्धि करके जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करती है।

प्राकृतिक वृद्धि जन्म दर – मृत्यु दर

वास्तविक वृद्धि दर जन्म दर – मृत्यु दर + आगत प्रवास-निर्गत प्रवास

जनसंख्या में वृद्धि दर सकारात्मक अथवा नकारात्मक हो सकती है। सकारात्मक जनसंख्या वृद्धि दर का अर्थ किसी क्षेत्र में लोगों की संख्या में वृद्धि जबकि जनसंख्या में नकारात्मक वृद्धि दर का अर्थ है जनसंख्या में कमी होना। जनसंख्या में सकारात्मक वृद्धि दर तब होती है जब आगत प्रवास तथा जन्म की संख्या उस क्षेत्र में होने वाली मृत्यु की संख्या और निर्गत प्रवास से अधिक होती है। दूसरी ओर नकारात्मक वृद्धि दर का अर्थ सकारात्मक वृद्धि दर का उल्टा होता है अर्थात् निर्गत प्रवास और मौतों की संख्या होने वाले जन्म तथा आगत प्रवास से अधिक होता है।

तालिका 21.1 को देखिए, आप पाएंगे कि 1901 में हमारे देश की कुल जनसंख्या 238 मिलियन थी। 2011 तक इसमें अभूतपूर्व वृद्धि हुई और यह बढ़कर 1027 मिलियन हो गई। पिछले सौ सालों में लगभग 932 मिलियन जनसंख्या बढ़ी है। यह वृद्धि 1901 के बाद से लगभग 4.3 गुणा बढ़ गई है।

तालिका 21.1 भारत: दशकीय वृद्धि 1901 से 2011

प्रति दशक जनसंख्या में वृद्धि

जनगणना वर्ष	कुल जनसंख्या (मिलियन में)	सकल वृद्धि	प्रतिशत में वृद्धि	दशकीय वृद्धि
1901	238.40	....	......	.....
1911	252.09	+13.70	5.75	0.56
1921	251.32	-0.77	-0.31	-0.03
1931	278.98	+11.00	11.00	1.04

5:01
Ch-21.pdf
nios.ac.in

1941	318.66	+39.68	14.22	1.33
1951	361.09	+42.43	13.31	1.25
1961	439.23	+78.15	21.64	1.96
1971	548.16	+108.92	24.80	2.22
1981	683.33	+135.17	24.66	2.22
1991	843.39	+163.06	23.86	2.14
2001	1027.02	+180.63	21.34	1.93
2011	1210.19	+181.58	17.64	.....

स्रोत: भारत की जनगणना

यदि हम 100 वर्षों की जनसंख्या वृद्धि को देखें तो इसको व्यापक रूप से निम्नलिखित चार वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. स्थिर वृद्धि दर की अवधि (1921 से पूर्व)
2. धीमी वृद्धि दर की अवधि (1921-1951)
3. तीव्र वृद्धि दर की अवधि (1951-81)
4. घटती वृद्धि दर की अवधि (1981 के बाद)

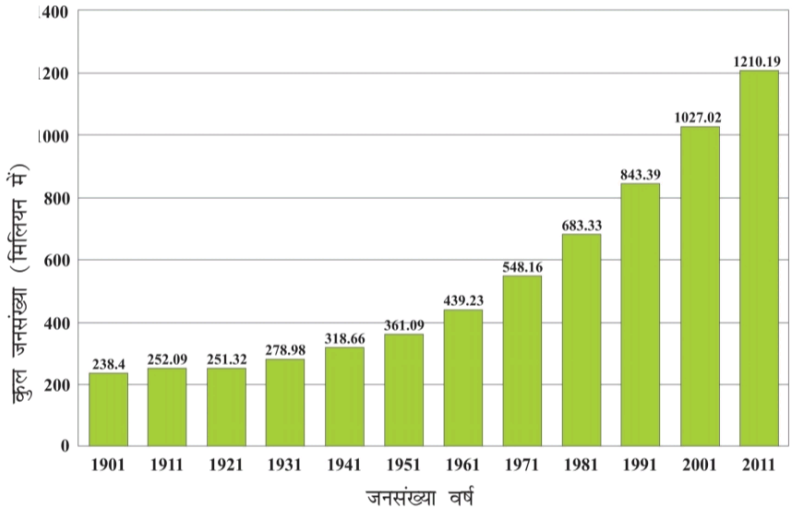

चित्र 21.2 भारत 1901 से 2011 के बीच जनसंख्या वृद्धि की प्रवृति

5:01
Ch-21.pdf
nios.ac.in

आइये हम प्रत्येक पक्ष पर संक्षेप में चर्चा करें-

1. **स्थिर वृद्धि दर की अवधि (1921 से पूर्व):** 1921 से पूर्व जनसंख्या में वृद्धि थोड़ी-बहुत अनियमित और धीमी थी। इसका मुख्य कारण उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर था। इसलिए प्राकृतिक वृद्धि कुछ विशेष नहीं थी। 1911 से 21 के बीच अकाल और महामारियों के कारण जनसंख्या वृद्धि में कमी आई। 1921 के बाद जनसंख्या बढ़ती रही। इसलिए 1921 को भारत में जनसंख्या अध्ययन की विभाजक रेखा मानते हैं।

2. **धीमी वृद्धि दर की अवधि (1921-1951):** वर्ष 1921 से 1951 के बीच जनसंख्या में धीमी वृद्धि हुई। ऐसा मृत्यु दर में कमी के कारण था। यह कमी मुख्य रूप से स्वच्छता और चिकित्सकीय सुविधाओं में सुधार के कारण थी। अन्य सहायक कारकों में सड़क सुविधाओं में वृद्धि थी जिससे खाद्य सामग्री की कमी को पूरा करने तथा कृषि अर्थव्यवस्था में भरपूर सुधार हुआ। अत: इस अवधि में जनसंख्या वृद्धि का कारण मृत्यु दर में कमी थी।

3. **तीव्र वृद्धि दर की अवधि (1951-81):** भारत की जनसंख्या में वृद्धि के मामले में यह अवधि बहुत महत्वपूर्ण है। इन तीन दशकों में जनसंख्या लगभग दोगुनी हो गई। इस अवधि में मृत्यु दर में तेजी से कमी हुई जबकि जन्म दर में बहुत कम कमी आई। तालिका में देखिए आपको ज्ञात होगा कि जन्म दर 41.7 से घट कर 37.2 हुई जबकि मृत्यु दर में बहुत भारी अंतर था जिसके परिणाम स्वरूप प्राकृतिक वृद्धि की दर ऊंची रही। ऐसा विकास कार्यों में तेजी, चिकित्सकीय सुविधाओं तथा लोगों की जीवन स्थितियों में सुधार के कारण हुआ। वृद्धि की इस अवधि को प्रजनन जनित वृद्धि की अवधि कहा जाता है।

4. **घटती वृद्धि दर की अवधि:** (1981 के बाद) गत तीन दशकों में अर्थात् 1981-91, 1991-2001 और 2001-2011 में वृद्धि दर में धीरे-धीरे कमी आने लगी है। यह भारत के जनसांख्यिकीय इतिहास में नए युग के प्रारंभ का संकेत है। इस अवधि में जन्म दर 1971-81 में 37.2 से घटकर 1991-2001 में 24.8 हो गई जबकि मृत्युदर धीमी दर से घटती रही। इस अवधि में मृत्यु दर 15.0 से घटकर 8.9 हो गई। घटने की यह प्रवृत्ति सकारात्मक है और इसका श्रेय सरकार के परिवार कल्याण कार्यक्रमों को बढ़ावा देने में प्रभावी भूमिका तथा लोगों की जागरूकता को दिया जा सकता है।

जनसंख्या वृद्धि में क्षेत्रीय असंतुलन: अब तक हमने 110 वर्षों की अवधि में जनसंख्या की वृद्धि दर पर चर्चा की है। 1991-2001 में भारतीय राज्यों और केन्द्र शासित क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि दर का स्पष्ट प्रतिरूप है। केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, उड़ीशा, पुदुचेरी और गोवा एक दशक में वृद्धि की कम दर को दर्शाते हैं जो 20 प्रतिशत से अधिक नहीं है। केरल की जन्म दर (9.4) इस समूह में ही सबसे कम नहीं थी अपितु पूरे देश की तुलना में भी कम थी। पश्चिम से पूर्व और उत्तर पश्चिम, उत्तर और देश के उत्तरी केन्द्रीय भागों में दक्षिणी राज्यों की तुलना में जन्म दर अधिक थी। इस पट्टी अर्थात् गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, पश्चिम बंगाल, बिहार, छत्तीसगढ़ और झारखंड में औसत जन्म दर 20 से 25 प्रतिशत तक बनी रही। 2001 से 2011 के

5:01
Ch-21.pdf
nios.ac.in

बीच लगभग सभी राज्यों एवं केन्द्र शासित क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि दर पिछले दशक की दर से कम रही। सबसे अधिक जनसंख्या वाले छह राज्यों उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल, आंध्रप्रदेश और मध्यप्रदेश में दशक की प्रतिशत वृद्धि दर में 1991-2001 की तुलना में 2001-2011 में कमी आई है। आंध्रप्रदेश में कमी सबसे अधिक (3.5 प्रतिशत प्वाइंट्स) और महाराष्ट्र में अधिकतम (6. 7 प्रतिशत प्वाइंट्स) रही। तमिलनाडु में 3.9 प्रतिशत प्वाइंट्स और पांडिचेरी में पहले से कुछ अधिक 7.1 प्रतिशत प्वाइंट्स दर्ज की गई।

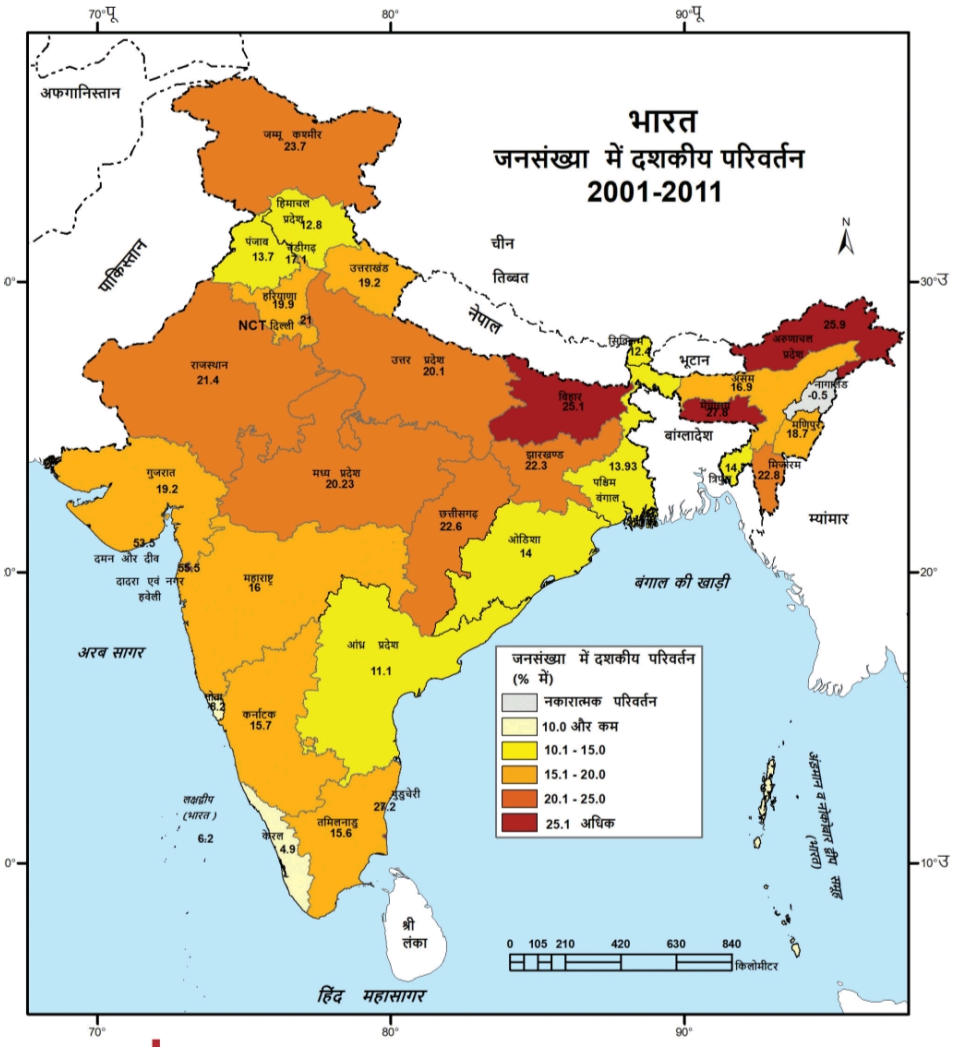

चित्र 21.3 भारत: 2011 में जनसंख्या वृद्धि

5:01
Ch-21.pdf
nios.ac.in

पाठगत प्रश्न 21.1

1. सबसे उपयुक्त उत्तर पर सही का निशान लगाएं:

   (a) भारत में जनसंख्या वृद्धि की उच्च दर का मुख्य कारण है-

   i. तीव्रता से बढ़ती जन्म दर

   ii. तीव्रता से घटती मृत्यु दर

   iii. आगत प्रवास की बड़ी संख्या

   iv. बहुत ही उच्च जन्म दर और मृत्यु दर

   (b) भारत में जनसंख्या वृद्धि की दर कब से निरंतर बढ़ रही है?

   i. 1901 से

   ii. 1921 से

   iii. 1951 से

   iv. 1981 से

2. 2011 की जनगणना के अनुसार उच्च जन्म दर एवं निम्न जन्म दर वाले राज्यों के नाम लिखिए।

3. उन राज्यों के नाम लिखिए जहां जनसंख्या वृद्धि की दर निम्नतम है।

21.2 जनसंख्या वितरण

विश्व की अथवा किसी देश की जनसंख्या का वितरण एक समान नहीं है। भारत के लिए भी यही सत्य है। देश के कुछ भागों में जनसंख्या का घनत्व अधिक, कुछ में सामान्य और कुछ में कम है। उदाहरण के लिए हिमालय के पहाड़ी और वन क्षेत्रों में जनसंख्या कम है जबकि गंगा के निकट उपजाऊ मैदानी भागों में जनसंख्या अधिक है। क्या आप इसका कारण जानते हैं? इस प्रकार के बदलावों के लिए अनेक कारक उत्तरदायी हैं। इन कारकों को व्यापक रूप से दो वर्गों में अर्थात भौतिक और सामाजिक-आर्थिक वर्गों में बांटा जा सकता है।

5:02
Ch-21.pdf
nios.ac.in

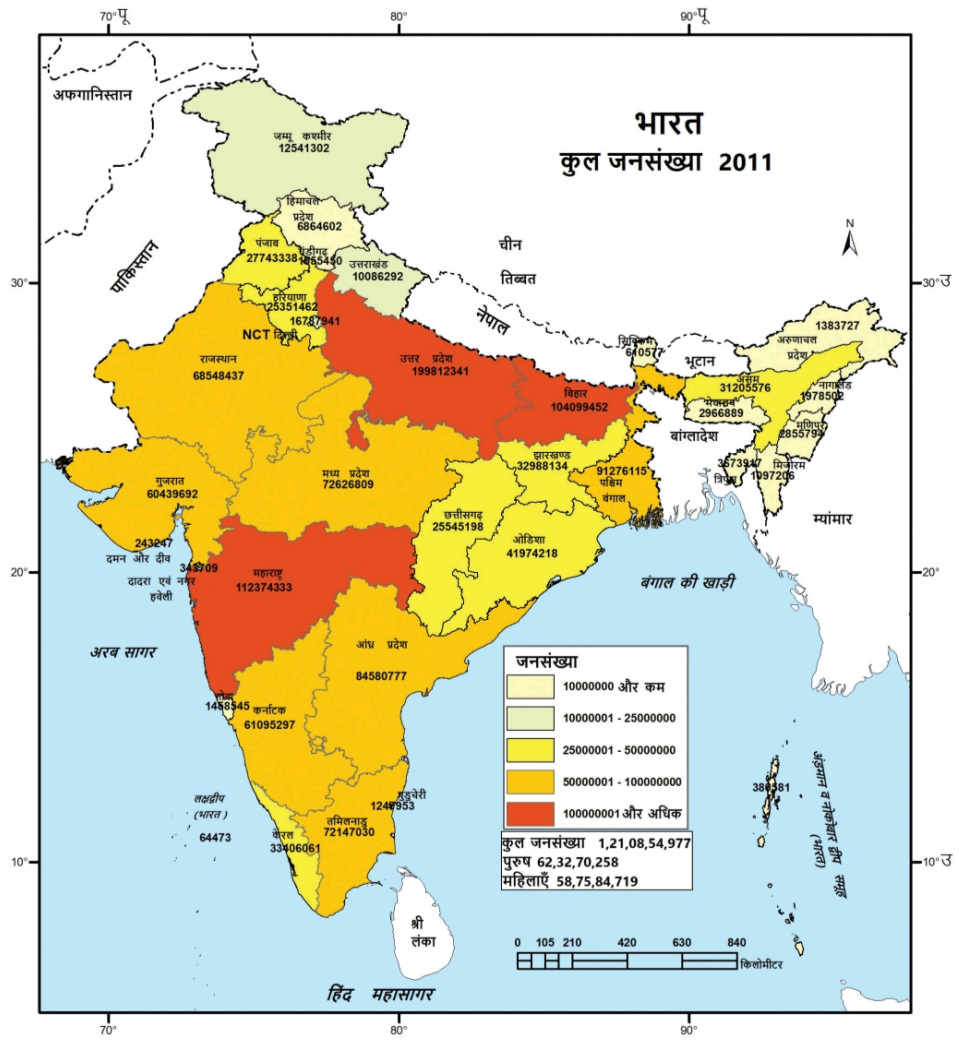

चित्र 21.4 भारत में जनसंख्या वितरण 2011

जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारक जैसा कि हमने पहले चर्चा की है कि भारत में जनसंख्या का स्थानिक वितरण एक समान नहीं है। क्षेत्रीय बदलाव बहुत अधिक हैं। जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले ऐसे सभी कारकों को दो मुख्य वर्गों में बांटा जा सकता है-

Ch-21.pdf
nios.ac.in

(क) भौतिक कारक, (ख) सामाजिक आर्थिक कारक

(क) भौतिक कारकः

जनसंख्या घनत्व और वितरण में भौतिक कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भौतिक कारकों में स्थलाकृति, जलवायु, मृदा इत्यादि शामिल होते हैं। यद्यपि प्रौद्योगिकी में बहुत सुधार हुआ है परंतु पूरे विश्व में जनसंख्या वितरण प्रतिरूप अनेक भौतिक कारकों के प्रभाव को प्रदर्शित करते हैं।

i.) **स्थलाकृतिः** जनसंख्या वितरण को निर्धारित करने वाली स्थलाकृति की दो सबसे महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं- उसकी ऊंचाई और ढलान। ऊंचाई और ढलान के सबसे प्रत्यक्ष साक्ष्य पहाड़ों और मैदानों के बीच के जनसंख्या वितरण में दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए एक तरफ आप सबसे घनी जनसंख्या वाले सिंधु-गंगा के मैदान लीजिए और दूसरी ओर पर्वतीय राज्य अरुणाचल प्रदेश को लीजिए। इसके अतिरिक्त अपवाह और जल स्तर भी जनसंख्या वितरण को प्रभावित करते रहे हैं।

ii.) **जलवायुः** भौतिक कारकों जनसंख्या को प्रभावित करने वाले में जलवायु भी एक अनिवार्य तत्व है जो जनसंख्या के स्थानिक वितरण पर प्रभाव डालता है। मानव जनसंख्या को प्रभावित करने वाले जलवायु के प्रमुख तत्व, तापमान की स्थिति और वर्षा की मात्रा हैं। राजस्थान के उष्ण और शुष्क मरुस्थल तथा देश के पूर्वी हिमालय के आर्द्र क्षेत्रों को लीजिए जहां तापमान बहुत कम और भारी वर्षा होती है। अन्य कारणों जैसे तीव्र ढलान, खराब मृदा के अतिरिक्त यह भी इन क्षेत्रों में विरल आबादी का प्रमुख कारण हैं। केरल के तटीय मैदानों और उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल के गंगा के मैदानों में जनसंख्या का उच्च घनत्व और एक समान वितरण पाया जाता है जहां वर्षा सामान्य से अधिक होती है।

iii.) **मृदाः** जैसा ऊपर कहा गया है कि मृदा भी जनसंख्या के वितरण और घनत्व पर प्रभाव डालने वाला एक अन्य कारक है। औद्योगिक समाज में आजकल कोई भी मृदा की भूमिका पर प्रश्न उठा सकता है। लेकिन आज भी आबादी का 70 प्रतिशत गांवों में रहता है। गांवों में रहने वाले लोग अपनी आजीविका कृषि से अर्जित करते हैं जो मृदा की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। यही कारण है कि उत्तरी मैदान का जालोढ़ क्षेत्र और भारत के तटीय और डेल्टा क्षेत्रों में जनसंख्या का उच्च संकेन्द्रण जारी है। दूसरी ओर यह उल्लेखनीय है कि राजस्थान जैसे मरुस्थलीय क्षेत्रों, गुजरात में कच्छ के रण, उत्तराखण्ड के तराई क्षेत्र मृदा अपरदन और मृदा उत्फुल्लन (मिट्टी का फूलना) से परेशान हैं जिसके कारण वहां जनसंख्या का संकेन्द्रण कम है।

किसी भी क्षेत्र में जनसंख्या का वितरण एक से अधिक कारकों पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र को लीजिए। यहां जनसंख्या के कम घनत्व के लिए अनेक कारक उत्तरदायी हैं। ये कारक हैं- उच्च वर्षण, असमान स्थलाकृति क्षेत्र, घने जंगल और मृदा की खराब गुणवत्ता।

5:02
Ch-21.pdf
nios.ac.in

(ख) सामाजिक आर्थिक कारक

भौतिक कारकों की भांति सामाजिक-आर्थिक कारक भी जनसंख्या वितरण में बराबर की भूमिका निभाते हैं। हालांकि इन दो निर्धारकों के समान महत्व के बारे में पूर्ण सहमति नहीं हो सकती। कुछ स्थानों में भौतिक कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जबकि कुछ अन्य स्थानों में सामाजिक-आर्थिक कारक अधिक प्रभाव डालते हैं। जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले अनेक आर्थिक सामाजिक कारकों में (i.) सामाजिक सांस्कृतिक और राजनीतिक कारक तथा (ii.) प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्ध ता शामिल हैं।

(i.) **सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक कारक:** आइये हम इस कारक की व्याख्या एक उदाहरण से करें। मुम्बई-पुणे औद्योगिक परिसर यह प्रदर्शित करने का एक अच्छा उदाहरण है कि किस प्रकार सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक कारकों ने मिलकर जनसंख्या की तीव्र वृद्धि में योगदान दिया है। 500 वर्ष पूर्व पश्चिमी घाट पर थाणे क्रीक के महत्वहीन द्वीप थे। साहसी पुर्तगाली नाविकों ने अपने सम्राट के लिए इन द्वीपों पर दावा किया। पुर्तगालियों ने इन फैले द्वीपों को बाद में इंग्लैंड के राज परिवार को दहेज के रूप में भेंट किया। इन द्वीपों पर बसे मछुआरों के गांवों में किसी को भी अनुमान नहीं था कि वे शीघ्र ही भारत की बहुत बड़ी आबादी वाले द्वीप हो जाएंगे। इंग्लैंड की ईस्ट इंडिया कंपनी ने इन द्वीपों पर अपना व्यापार केन्द्र स्थापित किया और बाद में इसको बाम्बे प्रेसीडेंसी का बड़ा शहर बना दिया। पारसियों, कच्छवासियों और गुजराती उद्यमी व्यापारिक समुदायों और अन्य ने वहां कपड़ा मिलें, जल ऊर्जा का विकास, पश्चिमी घाटों में सड़कें रेल लाइनों को बिछाकर इसको भीतरी इलाकों के साथ जोड़ा। अनुमान ही नहीं था कि अंतर्राष्ट्रीय स्वेज नहर मुम्बई को यूरोप का निकटतम बंदरगाह बना देगी। मुम्बई और पुणे से शिक्षित युवाओं की उपलब्धता और कोकण से सस्ते और अनुशासित मजदूरों ने यहां की जनसंख्या की तीव्र वृद्धि में योगदान दिया। बाम्बे हाई में तेल और प्राकृतिक गैस की खोज ने यहां पेट्रो-रसायन उद्योग को बल दिया। मुम्बई को भारत की वाणिज्यिक राजधानी कहा जाता है जहां अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू हवाई अड्डे, प्रमुख बंदरगाहें और राष्ट्रीय राजमार्ग तथा रेलवे टर्मिनल हैं। औपनिवेशिक शासकों द्वारा स्थापित कोलकाता और चेन्नई की कहानी भी ऐसी ही है।

(ii.) **प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता:** छोटा नागपुर पठार का क्षेत्र हमेशा चट्टानी और बीहड़ क्षेत्र रहा है। वर्षा और वनों से भरा यह क्षेत्र अनेक जनजातीय समूहों का घर तथा देश की कम जनसंख्या वाला क्षेत्र रहा है। हालांकि पिछली सदी में यहां लौह अयस्क, मैगनीज, चूने का पत्थर और कोयला इत्यादि के समृद्ध और अपार खनिज मिलने के बाद यहां औद्योगिक शहरों और केन्द्रों की एक शृंखला खड़ी हो गई थी। कोयले और लोहे से समृद्ध क्षेत्रों ने भारी उद्योगों विशेषकर लोहे और इस्पात, भारी इंजीनियरिंग, धातु कर्म और परिवहन उपकरण के उद्योगों को आकर्षित किया है। इस क्षेत्र में उच्च शक्ति के महत्वपूर्ण ताप विद्युत केन्द्र भी हैं जहां से दूर-दराज के क्षेत्रों को बिजली की आपूर्ति की जाती है। उदारीकरण के बाद अनेक बहुराष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय कम्पनियों ने बड़ी संख्या में यहां अपने उद्योग स्थापित किए। अब तक आपको यह

5:02
Ch-21.pdf
nios.ac.in

स्पष्ट हो गया होगा कि कोई क्षेत्र क्यों कम आबादी वाला और कोई अन्य क्षेत्र क्यों सघन आबादी वाला क्षेत्र होता है। लेकिन क्या आप जनसंख्या की इस सघनता को मापने का तरीका जानते हैं? 'घनत्व' एक ऐसा ही माप है। आइये अब हम नीचे के खण्ड में जनसंख्या घनत्व के बारे में चर्चा करते हैं।

21.3 जनसंख्या घनत्व

विभिन्न क्षेत्रों की जनसंख्या के आकार की तुलना कई प्रकार से की जा सकती है। एक तरीका वहां की जनसंख्या के निरपेक्ष आकार के आधार पर तुलना हो सकता है। परंतु इससे उस क्षेत्र की जनसंख्या और क्षेत्रफल के बीच किसी प्रकार के सम्बन्ध अथवा वहां के संसाधन आधार के बारे में कुछ पता नहीं चलता। इस प्रकार की तुलना पर्याप्त नहीं है। उदाहरण के लिए सिंगापुर की जनसंख्या 4.2 मिलियन है और पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की जनसंख्या 1300 मिलियन है। निश्चत ही एक बहुत कम है और दूसरी बहुत अधिक है। अब हम सिंगापुर के क्षेत्रफल पर विचार करते हैं जो मात्र 630 वर्ग किलोमीटर है जबकि चीन का क्षेत्रफल 9.5 मिलियन वर्ग किलोमीटर है। इससे हमें यह जानने में सहायता मिलती है कि सिंगापुर चीन की तुलना में इतना भीड़भाड़ वाला क्यों है? इसलिए विभिन्न देशों की जनसंख्या की तुलना प्राय: जनसंख्या घनत्व के द्वारा करते हैं। यह तरीका विभिन्न क्षेत्रों की जनसंख्या और भू-क्षेत्र के अनुपात के आधार पर तुलना करने का तरीका है। इस उद्देश्य के लिए किसी क्षेत्र की कुल जनसंख्या का वितरण समान माना जाता है और प्रति वर्ग किलोमीटर में जनसंख्या की गणना की जाती है। इसको जनसंख्या का अंकगणितीय घनत्व अथवा सीधे-सीधे जनसंख्या घनत्व कहा जाता है। इसलिए जनसंख्या घनत्व की गणना करने के लिए क्षेत्र की कुल जनसंख्या को उस क्षेत्र के कुल क्षेत्रफल से भाग करके ज्ञात किया जाता है। अत: जनसंख्या के घनत्व को प्रति वर्ग किलोमीटर में रहने वाली जनसंख्या के रूप में व्यक्त किया जाता है।

तालिका 21.2 भारत: जनसंख्या घनत्व

जनगणना वर्ष	जनसंख्या घनत्व
1901	77
1911	82
1921	81
1931	90
1941	103
1951	117
1961	142
1971	177
1981	216
1991	274

5:02
Ch-21.pdf
nios.ac.in

2001	324
2011	382

स्रोत: भारत की जनगणना

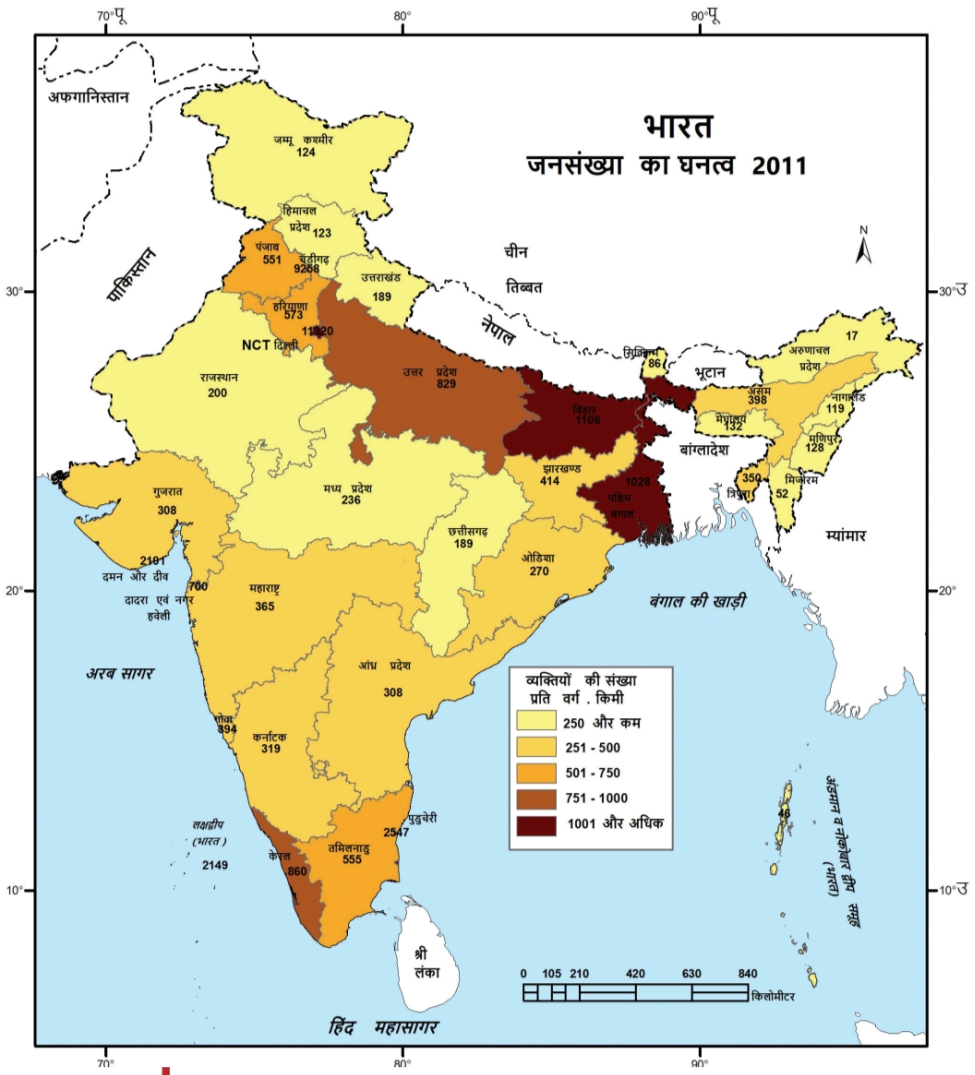

चित्र 21.5 भारत जनसंख्या का घनत्व (2011)

5:03
Ch-21.pdf
nios.ac.in

2011 की जनगणना के अनुसार भारत में जनसंख्या का घनत्व 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। विगत 110 वर्षों में (1901 से 2011) जनसंख्या घनत्व पांच गुणा बढ़ गया है। 1901 में 77 से बढ़कर 2011 में यह 382 हो चुका है। स्वतंत्रता के बाद यह बहुत तीव्रता से बढ़ा है। 1951 की जनगणना में जनसंख्या का घनत्व 117 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था। स्वतंत्रता के बाद यह तीन गुणा बढ़ गया है। जब हम कहते हैं कि भारत में जनसंख्या का घनत्व 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है तो इसका यह अर्थ नहीं है कि प्रत्येक वर्ग किलोमीटर में अलग-अलग से 382 व्यक्ति रहते हैं। वास्तव में जनसंख्या का वितरण बहुत असमान है। नीचे के खण्ड में हम भारत में घनत्व के स्थानिक बदलावों के विश्लेषण के लिए राज्य को एक इकाई के रूप में लेकर चर्चा करेंगे।

जनसंख्या घनत्व: अंतर्राज्यीय स्तर पर विश्लेषण

जनसंख्या घनत्व का वर्णन अथवा इसकी व्याख्या इसके उद्देश्य के आधार पर दो तरीकों से की जा सकती है। विस्तृत रूप से जनसंख्या वितरण की प्रवृति जानने के लिए घनत्व की गणना राज्य जैसी बड़ी इकाई लेकर की जाती है। यदि बहुत सही जानकारी आवश्यक हो तो जिला अथवा तहसील जैसी छोटी इकाई का प्रयोग किया जाता है।

आइए हम भारत में जनसंख्या घनत्व की प्रवृति का पता लगाते हैं। आपको भारत में जनसंख्या घनत्व के बदलाव के बारे में आपको इस तथ्य से स्पष्ट हो जाएगा कि अरुणाचल प्रदेश की औसत जनसंख्या 17 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है जबकि 2011 की जनगणना के अनुसार राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में जनसंख्या 11,320 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। राज्यों में भारत के उत्तरी राज्यों बिहार (1106), पश्चिम बंगाल (1028) और उत्तर प्रदेश (829) में उच्च घनत्व है जबकि केरल (860), और तमिलनाडु (555) में दक्षिणी राज्यों की दृष्टि से अधिक घनत्व है। असम, गुजरात, आंध्रप्रदेश, हरियाणा, झारखंड और उड़ीसा में जनसंख्या घनत्व मध्यम है। हिमालय क्षेत्र के पहाड़ी राज्यों तथा भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में तुलनात्मक दृष्टि से जनसंख्या कम है जबकि अण्डमान-निकोबार को छोड़कर शेष केन्द्र शासित क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व उच्च है।

राज्य स्तरीय आंकड़ों की उपलब्धता के आधार पर भारत में जनसंख्या घनत्व को तीन क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है। उच्च घनत्व, मध्यम घनत्व और कम घनत्व वाले क्षेत्र।

(i.) **उच्च घनत्व वाले क्षेत्र:** ऊपर दिए गए चित्र 21.5 में 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर घनत्व वाले राज्यों को इस वर्ग में शामिल किया गया है। इन क्षेत्रों में उपजाऊ भूमि और अधिक वर्षा के कारण जनसंख्या घनत्व अधिक है जैसे पश्चिम बंगाल, बिहार और केरल। क्या आप इस वर्ग में आने वाले अन्य राज्यों को पहचान सकते हैं? इन क्षेत्रों में अधिकांश लोगों को प्रति इकाई क्षेत्रफल में उपजाऊ भूमि की उपलब्धता के कारण जीविका प्रदान की जा सकती है, जो बड़ी संख्या में लोगों के लिए भोजन पैदा कर सकते हैं। लेकिन केन्द्र शासित क्षेत्रों दिल्ली, पुद्दुचेरी और चंडीगढ़ में स्थिति बिल्कुल अलग है। यह क्षेत्र बड़े शहरीकृत क्षेत्र हैं और यह उद्योगों और सेवा क्षेत्र में नौकरियां प्रदान करते हैं। अत: हम कह सकते हैं कि उपजाऊ भूमि और अच्छे रोजगार के अवसर देने वाले क्षेत्र घनी जनसंख्या वाले हैं। ऐसे अन्य राज्यों को खोजिए जो घनी जनसंख्या वाले क्षेत्र हैं।

5:03
Ch-21.pdf
nios.ac.in

ख्या वाले क्षेत्र हैं।

(ii.) **मध्यम जनसंख्या वाले क्षेत्र:** 100 से 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर की जनसंख्या वाले राज्यों और केन्द्र शासित क्षेत्रों को मध्यम जनसंख्या घनत्व वाले राज्यों के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। इनमें आंध्रप्रदेश, असम, दादरा और नगर हवेली, गोवा, गुजरात, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, राजस्थान, त्रिपुरा, छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर और मेघालय शामिल हैं। क्षेत्रफल की दृष्टि से इस वर्ग में भारत का सबसे बड़ा भाग आता है। व्यापक स्तर पर बात करें तो मध्यम जनसंख्या घनत्व ऐसे क्षेत्रों की विशेषता हैं जहां ऊबड़-खाबड़ स्थलाकृति के कारण कृषि बाधित है, वर्षा कम होती है और सिंचाई के लिए पानी की कमी है। यदि इन क्षेत्रों को आवश्यक सुविधाएं प्रदान की जाएं तो इन क्षेत्रों में प्राथमिक और द्वितीयक गतिविधियों के लिए अपार सम्भावनाएं हैं- उदाहरण के लिए स्वतंत्रता के समय छोटा नागपुर कम आबादी वाला क्षेत्र था परंतु अब में खनन और उद्योगों के विकास के कारण यह मध्यम जनसंख्या घनत्व वाला क्षेत्र बन गया है।

(iii.) **कम घनत्व वाले क्षेत्र:** भारत के शेष सभी भाग जहां जनसंख्या का घनत्व 100 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से कम है, इस वर्ग में रखे जाते हैं। इस वर्ग में आने वाले राज्यों और केन्द्र शासित क्षेत्रों में अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, सिक्किम और अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह शामिल हैं। कम जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्रों के लिए उबड़-खाबड़ क्षेत्र तथा कम वर्षा और खराब जलवायु दोषी है। उपरोक्त कारणों से यहां आजीविका अर्जित करने के अवसर भी कम हैं। अति शुष्क और सर्द क्षेत्रों में कृषि को विकसित नहीं किया जा सकता। असमान स्थलाकृति और कृषि संसाधनों के कम होने के कारण शहरीकरण और औद्योगीकरण भी सीमित है। इसलिए इन क्षेत्रों में प्रति वर्ग किलोमीटर में रहने वाले लोगों की संख्या कम है। पर्वतीय और पहाड़ी क्षेत्रों में केवल यातायात और संचार की ही कठिनाई नहीं है अपितु सकल आर्थिक विकास भी कठिन है। इसी कारण यहां जनसंख्या घनत्व कम है।

पाठगत प्रश्न 21.2

1. उच्च जनसंख्या घनत्व वाले तीन राज्यों के नाम लिखिए

   (a) .... (b) .... (c) ....

2. भारत के ऐसे तीन केन्द्र शासित क्षेत्रों के नाम लिखिए जो उच्च जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्रों में शामिल हैं।

   (a) .... (b) .... (c) ....

3. कम जनसंख्या घनत्व वाले वर्ग में आने वाले किन्हीं तीन राज्यों के नाम लिखिए

   (a) .... (b) .... (c) ....

4. कम जनसंख्या घनत्व वाले किसी एक केन्द्र शासित क्षेत्र का नाम लिखिए।

5. दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्तस्थान भरिये।

   (a) अधिक वर्षा और उपजाऊ भूमि वाले क्षेत्रों में प्राय: जनसंख्या घनत्व............... होता है। (अधिक, मध्यम, कम)

   (b) सूखे से ग्रस्त और ऊबड़-खाबड़ स्थलाकृति वाले क्षेत्रों में प्राय: जनसंख्या घनत्व............... होता है। (अधिक, मध्यम, कम)

21.4 जनसंख्या वृद्धि की चुनौतियां

अब तक हमने जनसंख्या के आधार एवं वृद्धि पर चर्चा की है। हमने जनसंख्या वितरण तथा उसको प्रभावित करने वाले कारकों पर भी चर्चा की है। विशाल जनसंख्या को देखते हुए देश में जनसंख्या वृद्धि और आकार के बारे में भिन्न-भिन्न विचार रहे हैं। व्यापक रूप से इन विचारों को दो वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है। यह इस प्रकार है-

1. विशाल जनसंख्या देश के सर्वांगीण विकास में बाधक होती है

2. जनसंख्या में वृद्धि और संख्या वास्तविक समस्या नहीं है।

पहला विचार निराशावादी है जबकि दूसरा विचार आशावादी है। निम्नलिखित पैराग्राफों में हम दोनों विचारों के पक्ष और विपक्ष में कुछ तर्कों पर विचार करेंगे।

(क) विशाल जनसंख्या देश के सर्वांगीण विकास में बाधक होती है: एक गंभीर समस्या के रूप में 'जनसंख्या की अधिकता का चरम विचार' भारत की लगभग सभी सामाजिक और आर्थिक बुराइयों के लिए जनसंख्या वृद्धि को जिम्मेदार ठहराने का प्रयास करता है। आर्थिक विकास पर विभिन्न क्षेत्रों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, भोजन, आर्थिक वृद्धि में रुकावट के रूप में इसका नकारात्मक प्रभाव होता है। 1970 के दशक तक इसी प्रकार का विचार नीति निर्माताओं और योजनाकारों को प्रभावित करता रहा। पंचवर्षीय योजनाओं में परिवार नियोजन के विभिन्न कार्यक्रम लागू किए गए। 1975-77 के बाद इस नीति में परिवर्तन 'परिवार नियोजन' का नाम बदलकर 'परिवार कल्याण' के रूप में सामने आया। लेकिन जनसंख्या नीतियों में वास्तविक परिवर्तन 1994 में मिस्र में काहिरा में जनसंख्या और विकास पर अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेस के बाद आया। इसको पूरी तरह से राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2000 में प्रतिबिम्बित किया गया।

(ख) जनसंख्या वृद्धि वास्तविक समस्या नहीं है: समस्या जनसंख्या वृद्धि नहीं अपितु कुछ और मुद्दे हैं। अल्प विकास, संसाधनों का असमान वितरण और उन तक पहुंच, महिलाओं का निर्भर होना इत्यादि की समस्याएं हैं। जब तक विकासशील देशों जैसे भारत में गरीबी और अशिक्षा रहेगी तब तक अधिकांश सुरक्षा का एकमात्र स्रोत बड़ा परिवार होगा। वास्तविकता यह है कि विश्व की 25 प्रतिशत से कम जनसंख्या वाले देश विश्व के 80 प्रतिशत संसाधनों का

Ch-21.pdf
nios.ac.in

उपभोग करते हैं। इस तर्क के अनुसार विकसित देशों को संसाधनों के उपभोग में कटौती करनी चाहिए न कि अल्प विकसित देशों को अपनी जनसंख्या सीमित करनी चाहिए। ऐसे देशों में प्रजनन की उच्च दर उनके जीवन के निम्न स्तर के कारण है। अत: अमीर देशों और गरीब देश के अमीर लोगों में बढ़ती सम्पन्नता और अत्यधिक स्वार्थी उपभोग विश्व की प्रमुख चिंता होनी चाहिए न कि जनसंख्या वृद्धि।

उपरोक्त विषयों पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर परिचर्चाएं और बहस हो चुकी हैं। जनसंख्या और विकास पर मिस्र के काहिरा में अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेस आयोजित हो चुकी है। आइये नीचे के खण्ड में हम इस कांफ्रेस के बारे में संक्षिप्त चर्चा करें।

जनसंख्या और विकास पर अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस: 1994 में मिस्र के शहर काहिरा में इस कांफ्रेस का आयोजन किया गया। इस कांफ्रेंस को जनसंख्या के मुद्दों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ माना गया है। क्या आप जानते हैं कि पैराडिम शिफ्ट क्या है? साधारण शब्दों में यह जनसंख्या फ्रेमवर्क, रणनीतियों और प्रवृति में आया बदलाव है। इस मामले में यह बड़ा बदलाव जनसंख्या नियंत्रण से हटकर जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने पर ध्यान देने वाला वातावरण निर्मित करना जो व्यक्तियों को सही निर्णय लेने में सहायता करेगा। दूसरे शब्दों में जनसंख्या अब केवल संख्या या आंकड़े नहीं थे अपितु उनके जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाना था। इस पर भी सहमति बनी कि कोई बल, कोई दबाव, कोई प्रोत्साहन और निरुत्साहन की जरूरत नहीं है। क्योंकि प्रोत्साहन और निरुत्साहन या तो दबाव होते हैं या अंत में दबाव में परिवर्तित हो जाते हैं और परिणाम वास्तव में उल्टा आता है। दबाव, मानव अधिकारों का उल्लंघन करता है और मानव विकास को रोकता है। भाग लेने वाले सभी 179 देशों के राजकीय प्रतिनिधियों में सहमति थी कि महिलाओं का सशक्तीकरण एक वैश्विक प्राथमिकता है। इस कांफ्रेंस में इस समस्या को सार्वभौमिक मानवाधिकार के परिप्रेक्ष्य में ही नहीं लिया गया अपितु गरीबी उन्मूलन तथा जनसंख्या वृद्धि को स्थिर करने की दिशा में एक अनिवार्य कदम के रूप में लिया गया। किसी महिला का प्रजनन स्वास्थ्य और अधिकार उसके सशक्तीकरण की आधारशिला है।

भारत सहित कुल 179 सरकारों ने आई.सी.पी.डी. की कार्ययोजना पर हस्ताक्षर किए जिसमें निम्नलिखित शामिल है-

- परिवार नियोजन और लैंगिक और प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं तथा प्रजनन अधिकारों तक सबकी पहुंच सुनिश्चित करना।
- लैंगिक समानता, महिलाओं का सशक्तीकरण और लड़कियों के लिए शिक्षा के लिए एक समान पहुंच प्रदान करना।
- शहरीकरण और प्रवास के व्यक्तिगत, सामाजिक और आर्थिक प्रभाव पर ध्यान देना सतत विकास तथा जनसंख्या परिवर्तन के साथ जुड़े पर्यावरणीय मुद्दों पर सहयोग देना।

5:03
Ch-21.pdf
nios.ac.in

आई.सी.पी.डी. कार्य योजना ने व्यक्ति को विकास के केन्द्र में रखकर मानव विकास, मानवाधिकार, लैंगिक समता और समानता के स्तम्भ बनाने पर ध्यान दिया है। आई.सी.पी.डी. का मुख्य उद्देश्य जनसंख्या, सतत आर्थिक विकास आधार और सतत विकास के बीच संतुलन स्थापित करना था। काहिरा कांफ्रेंस में हुए समझौते का उद्देश्य जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाना तथा मानव विकास के लिए कल्याण और प्रोत्साहन को बढ़ाना था। कार्य योजना ने जनसंख्या की चिंताओं को पूरी तरह से विकास रणनीतियों और नियोजन के साथ जोड़ने पर ठीक ही बल दिया है जिसमें जनसंख्या के मुद्दों को गरीबी उन्मूलन, खाद्य सुरक्षा, पर्याप्त आश्रय (आवास), रोजगार और सबके लिए स्वास्थ्य एवं शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधाओं के साथ संबंधों पर ध्यान दिया जाना है।

जनसंख्या नीतियों की सोच और उन्हें लागू करने में पिछले दिनों दो मौलिक परिवर्तन हुए हैं। पहला जनसंख्या नीतियों और कार्यक्रमों को उच्च उत्पादकता (प्रजनन) के मूल कारण जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं अन्य उत्पादक संसाधनों तक की पहुंच में लैंगिक भेदभाव पर ध्यान देना और उसे ठीक करना। दूसरा वर्तमान परिवार कल्याण कार्यक्रमों में गर्भनिरोधकों की आपूर्ति से आगे बढ़कर प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं की शृंखला को शामिल करना तथा व्यक्ति के अधिकारों और देखभाल की गुणवत्ता सुधारने पर बल देना है। अब इन योजनाओं का केन्द्र व्यापक, समेकित तथा अलग प्रकार का हो गया है। पहले सकल प्रजनन दर और गर्भनिरोधक प्रचलन की दर अधिकांश जनसंख्या कार्यक्रमों को निश्चित करती थी क्योंकि वे सफलता के संकेतक भी थे। आई.सी.पी.डी. ने उनके स्थान पर देखभाल की गुणवत्ता, संसूचित चयन, लैंगिक कारक, महिला सशक्तीकरण और प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं के पूरे समूह तक सबकी पहुंच को प्राथमिकता दी है।

आई.सी.पी.डी. ने जनसंख्या, प्रजनन स्वास्थ्य, लैंगिक समानता को मानवाधिकार आधारित रूपरेखा में स्थान दिया है। इसका क्या अर्थ है? कार्यक्रमों में मानवाधिकार आधारित उपागम मूल आवश्यकता आधारित उपागमों से भिन्न है। यह उपागम अधिकारों की उपस्थिति को मान्यता देता है। यह काम करने वाले कर्मचारियों के अधिकारों को सम्मान, सुरक्षा और गारंटी देने पर बल देता है। अधिकार आधारित उपागम में प्रत्येक मनुष्य को एक अधिकार प्राप्त इकाई के रूप में मान्यता देता है। अधिकार आधारित उपागम अनिवार्य मानदण्डों की रूपरेखा और सिद्धांतों, कर्त्तव्यों और जिम्मेदारियों के अंतर्गत सभी जगह सभी लोगों के लिए स्वतंत्रता, कल्याण और गरिमा सुनिश्चित करने का प्रयास करता है। अधिकार आधारित उपागम इस प्रक्रिया को सुनिश्चित करने का समर्थन करता है कि सभी को उनके अधिकार प्राप्त हों तथा सभी सुरक्षित हों। सरकार की त्रिस्तरीय जिम्मेदारी है- रक्षा करना, सम्मान करना तथा प्रत्येक के अधिकार को पूरा करना।

5:04
Ch-21.pdf
nios.ac.in

पाठगत प्रश्न 21.3

1. 1994 में किस देश में जनसंख्या और विकास पर अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस हुई थी?
2. कितने देशों ने आई.सी.पी.डी. की कार्य योजना पर हस्ताक्षर किए थे?
3. आई.सी.पी.डी. कार्य योजना में दिए गए किन्हीं दो बिन्दुओं को लिखिए।

आपने क्या सीखा

किसी भी क्षेत्र में मानव संसाधन सबसे महत्वपूर्ण संसाधन होता है। किसी देश के आर्थिक विकास के लिए संसाधन की मात्रा से अधिक उसकी गुणवत्ता मायने रखती है। भारत पूरे विश्व में चीन के बाद सबसे अधिक जनसंख्या वाला दूसरा देश है। जनसंख्या वितरण का प्रायः घनत्व के माध्यम से अध्ययन किया जाता है।

भारत में जनसंख्या का घनत्व एक समान नहीं है। जनसंख्या घनत्व के आधार पर भारत को अधिक घनत्व वाले क्षेत्रों, मध्यम घनत्व वाले क्षेत्रों तथा कम घनत्व वाले क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है। जनसंख्या के घनत्व और वितरण को प्रभावित करने वाले कारकों को भी दो वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है। ये भौतिक और आर्थिक सामाजिक कारक हैं। भारत की जनसंख्या 1921 से तेजी से बढ़ रही है और वृद्धि की दर बढ़ रही है। जनसंख्या वृद्धि की दर जन्म दर, मृत्यु दर और किसी क्षेत्र में प्रवास से प्रभावित होती है। घनत्व और वितरण की भांति वृद्धि दर भी पूरे देश में एक समान नहीं है। विशाल जनसंख्या को देखते हुए देश में जनसंख्या की वृद्धि और आकार के बारे में अलग-अलग विचार है।

इन विचारों को दो वर्गों में बांटा जा सकता है। व्यापक विचार इस प्रकार हैं (1) किसी देश में विशाल जनसंख्या देश के सकल विकास में बाधक है (2) जनसंख्या में संख्या और वृद्धि वास्तविक समस्या नहीं है।

5:04
Ch-21.pdf
nios.ac.in

पाठांत प्रश्न

1. भारत में जनसंख्या वृद्धि की प्रमुख प्रवृतियां क्या हैं? इसके लिए उत्तरदायी कारकों पर चर्चा कीजिए।
2. भारत में जनसंख्या वितरण का संक्षेप में वर्णन कीजिए। उच्च, मध्यम और कम जनसंख्या घनत्व वाले कुछ क्षेत्रों को रेखांकित कीजिए।
3. जनसंख्या और विकास पर हुई अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस द्वारा सुझाई गई कार्य योजना की व्याख्या कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

21.1

1. a) i

   b) i
2. नागालैंड
3. केरल

21.2

1. पश्चिम बंगाल, केरल, बिहार, उत्तर प्रदेश, पंजाब, तमिलनाडु और हरियाणा (कोई तीन)
2. दिल्ली, चंडीगढ़, पुद्दुचेरी, लक्षद्वीप और दमन एवं दिपू (कोई तीन)
3. सिक्किम, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश
4. अंडमान और निकोबार समूह
5. a) उच्च

   b) कम

21.3

1. मिस्र
2. 179

5:04
Ch-21.pdf
nios.ac.in

3. परिवार नियोजन एवं लैंगिक और प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं तथा प्रजनन अधिकारों तक सबकी पहुंच बनाना।

- लैंगिक समानता, महिलाओं का सशक्तीकरण तथा लड़कियों के लिए शिक्षा तक एक समान पहुंच प्रदान करना।
- शहरीकरण और प्रवास के व्यक्तिगत, सामाजिक और आर्थिक प्रभाव पर ध्यान देना
- सतत विकास और जनसंख्या परिवर्तन से जुड़े पर्यावरणीय मामलों पर ध्यान देना।